शोध सारांश

किसी भी भाषा के शब्दों के व्याकरणिक विवेचन हेतु उसे शब्दभेदों में वर्गीकृत किया जाता है; जिसे भाषा विशेष के आधार पर शब्दवर्ग का विभाजन किया गया है| हिंदी में शब्दों को मुख्य रूप से जिन रूपों में नाम प्रदान किया गया वे हैं- संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया, विशेषण, क्रिया-विशेषण, संबंधबोधक, समुच्चयबोधक एवं विस्मयादिबोधक| ये कुल आठ प्रकार के होते हैं| प्रत्येक शब्दभेद के प्रकार को 'पद' बनने में व्याकरणिक कोटियों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है| अत: शब्द-स्तर के व्याकरणिक अध्ययन में शब्दभेद के साथ-साथ व्याकरणिक कोटियों का भी अध्ययन किया जाता है। व्याकरणिक कोटियों के अंतर्गत लिंग, वचन, पुरुष, काल, पक्ष, वृत्ति आदि आते हैं।

शब्दभेदों को विकार के आधार पर भी वर्गीकृत किया जाता है जिसमें शब्दों की रूपरचना एवं वाक्यात्मक व्यवहार को देखा जाता है इस आधार पर इनके दो भेद सामने आते हैं **विकारी और अविकारी|** जिसमें **'सर्वनाम' को** 'विकारी' के अंतर्गत रखा जाता है| भोजपुरी में भी सर्वनाम 'विकार' के अंतर्गत ही आता है अत: इनमें रूपरचनात्मक परिवर्तन होना स्वाभाविक है। जिसे देखते हुए शोध-विषय का चयन किया गया। प्रस्तुत शोध विषय को चार अध्याय में विभाजित किया गया है जिसमें अध्यायों के शीर्षक निम्नलिखित हैं –

प्रथम अध्याय- सर्वनाम : स्वरूप परिचय

द्वितीय अध्याय- भोजपुरी में सर्वनाम और परसर्ग

तृतीय अध्याय- भोजपुरी में सर्वनाम और परसर्ग

चतुर्थ अध्याय -भोजपुरी में सर्वनाम और क्रिया रूप

प्रथम अध्याय- 'सर्वनाम : स्वरूप परिच'- इस अध्याय में सर्वप्रथम शब्दभेद का संक्षिप्त विवेचन किया गया है। इसके बाद सर्वनाम की परिभाषा एवं प्रकार को बताते हुए भोजपुरी सर्वनाम की चर्चा की गई है जिसमें पुरुषवाचक सर्वनाम को नीचे दिए गए नमूना में देखा जा सकता है-

पुरुष	सर्वनाम
प्रथम- उत्तम पुरुष	हम, हमनीकऽ, हमहनकऽ, हमसब, हमनीसब
द्वितीय- मध्यम पुरुष	तू , तूं, तोहनीकऽ, तोहनकऽ, रउआ, रउआ सभे (रावाँसभे)
तृतीय- अन्य पुरुष	ऊ, ऊ लोग, उन्हनीकऽ, उन्हनक, उहां सब के

भोजपुरी में मूल रूप से निम्नलिखित सर्वनाम मिलते हैं, जैसे- हम, तू, ऊ/हुऊ, ई/ हई, रउआ, आप, आपन, केहू, के, कवन, जवन आदि जिनमें से रूपसाधन हम, तू, ऊ/ हऊ, ई/ हई, के, केहू, जे, के आदि रूप में देखने को मिलते हैं।

द्वितीय अध्याय- 'भोजपुरी में सर्वनाम और परसर्ग'- अंतर्गत भोजुपरी में सर्वनाम के प्रकार की चर्चा की गई है और उनके उदाहरण प्रस्तुत किए गए है। इस अध्याय में परसर्ग की चर्चा करते हुए भोजपुरी और परसर्ग के योग से बनने वाले रूपों को तालिकाओं के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है जिनमें से एक को नीचे उदाहरण के रूप में देख सकते हैं-

सर्वनाम	**परसर्ग**	**सर्वनामों के बनने वाले रूप**
हम	के	हमके, हमारा के
हमन/हमहन/हमनी	के	हमन के, हमनी के, हमहन के
तू	के	तोके, तोरा के, तहके, तहरा के, तोहरा के

ऊपर दिए गई तालिका में उन रूपों का एक नमूना प्रस्तुत किया गया है। इसमें सर्वनाम और परसर्ग के योग से '–सम्मान' और '+सम्मान' बनने वाले रूप को भी प्रस्तुत किया गया है| भोजपुरी में कर्ता के लिए कोई परसर्ग प्रयुक्त नहीं होता है। इस प्रकार परसर्गों के प्रयोग में अनेक विविधता होती हैं और यह स्थिति अन्य भाषाओं में भी पाई जाती है। इस स्थिति में यदि 'हम' भोजपुरी सर्वनाम और परसर्ग के योग को देखें तो विभिन्न रूप प्रयोग में मिलता है; जैसे- हम+0= **हम**, हम+के= **हमके**, हम+से= **हमसे** इत्यादि|

भोजपुरी शब्दों में रूप-विकार और प्रत्यय-योग एक साथ होता है; जैसे- तू+के = **तोहन के(बहुवचन)**। इसी प्रकार एकाधिक प्रत्यय भी एक साथ लगते हैं; जैसे- तू + ही + क + तऽ= **तोहनिये के तऽ** आदि। इनके रूपों में इतनी विविधता देखने को मिलती है कि किसे कब प्रयोग में लाया जाए; का निर्णय कठिन हो जाता है; जैसे- **इ/हई** में केवल 'के' परसर्ग के जुड़ने पर इ+के= **एके**, इ+के= **इनके,** इसी प्रकार से इ+के= **इनहन के,** इ+के **इन्हन के आदि** रूप में भी देखा जा सकता है| भोजपुरी सर्वनाम में परसर्गों के जुड़ने पर उनके रूपों में '**-सम्मान' एवं '+सम्मान'** की स्थिति भी देखने को मिलती है;

जैसे- जवन +के= **जवना के (-सम्मान),** जवन +के **=जेकरा के (+सम्मान)** आदि रूप में देखने को मिलता है|

इसलिए कभी–कभी यह निर्धारित कर पाना कठिन हो जाता है कि प्रत्यय को मूल शब्द के साथ मिलाकर लिखा जाए या अलग|

तृतीय अध्याय का शीर्षक भोजपुरी में सर्वनाम और निपात है इस अध्याय में निपात की परिभाषा और स्वरूप की चर्चा करते हुए भोजपुरी और निपात के योग से बनने वाले रूपों को तालिकाओं के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है इसे नीचे उदाहरण के रूप में देख सकते हैं -

सर्वनाम सूची	**निपात सूची**						
सर्वनाम सूची	**ही**	**भी**	**तो**	**सर्वनाम सूची**	**ही +के**	**भी +के**	**तो+के**
हम	हमहीं	हमहूँ	हमतऽ	**हम**	हमहींके	हमहूँ के	हमके तऽ
तू	तूहीं	तूहूँ	तूतऽ	**तू**	तोरे के	तोरो के	तोके तऽ
ऊ	ऊहे	ऊहो	ऊतऽ	**ऊ**	ओहने के	ओहनोके	ओहनोके तऽ
रऊआँ	रऊए	रऊओ	रऊआतऽ	**रऊआँ**	रऊए के	रऊओ के	रऊआ के तऽ

इस शोध कार्य में मुख्य रूप से निपात के रूप में 'ही, भी, तो' को ही लिया गया है| भोजपुरी में सर्वनाम के साथ निपात के जुड़ने से उनका रूप प्रभावित होता है; जैसे-हम +ही= **हमहीं**, हम+ ही **=हमरे**, हम + ही+के **= हमही के आदि|**

चतुर्थ अध्याय 'भोजपुरी में सर्वनाम और क्रिया रूप' है इस अध्याय में क्रिया की परिभाषा एवं प्रकार को बताते हुए भोजपुरी सर्वनामों के साथ प्रयुक्त होने वालेक्रिया रूप को काल, पक्ष और वृति के आधार पर प्रस्तुत किया गया है; जैसे-

सर्वनाम	हिंदी क्रिया(पदबंध)रूप	खाता	भोजपुरी क्रिया (पदबंध)रूप	स्त्री लिंग रूप
मैं	मैं खाता हूँ		हम खानी/खाईला	
हम	हम खाते हैं		हमन/हमनीकऽ खानी जा/खाइनिं जा	
तू	तू खाता है		तू खालेऽ	खाली
तुम	तुम खाते हो		तूं खालऽ	खालू
आप	आप खाते हैं		रउआ खानी/ खाईला	

हिंदी में निषेध के 'नहीं' के लिए भोजपुरी में **नइखन, ना, नइखे, नाहीं** आदि का प्रयोग होता है। जिसे नीचे दिए गए नमूने में देखा जा सकता है।

सर्वनाम	हिंदी	क्रिया(पदबंध)रूप	खाता	भोजपुरी क्रिया (पदबंध)रूप	स्त्री लिंग रूप
मैं	मैं नहीं खाता हूँ।			हम ना खानी/खाइला।	
हम	हम नहीं खा रहे हैं।			हमहन/हमनीकऽ नइखी जा खात।	

चतुर्थ अध्याय में सर्वनामों के अनुसार परिवर्तित होने वाले इन रूपों की चर्चा की गई है।